



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कुटीर उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के पाल्य किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, पारिवारिक वातावरण एवं सामाजिक-आर्थिक स्थिति : एक समीक्षात्मक अध्ययन

शोध निदेशिका

डॉ. रश्मि सिंह

शिक्षा शास्त्र विभाग

इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

शोधार्थी

अजीत सिंह

शिक्षा शास्त्र विभाग

इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

1. सारांश

भारत जैसे विकासशील देश की अर्थव्यवस्था में कुटीर उद्योग रोजगार सृजन और विकेंद्रीकृत आर्थिक विकास का एक प्रमुख स्तंभ हैं। इन पारंपरिक उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों का जीवन स्तर, आय की अनिश्चितता और सीमित सामाजिक सुरक्षा के कारण अत्यंत संवेदनशील बना रहता है। प्रस्तुत समीक्षात्मक शोध-पत्र कुटीर उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के पाल्य किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा पारिवारिक वातावरण तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति के अंतर्संबंधों का एक व्यवस्थित और आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। उपलब्ध माध्यमिक साहित्य, राष्ट्रीय सर्वेक्षणों और पूर्ववर्ती शोधों के गहन मूल्यांकन से यह स्पष्ट होता है कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर सीधे तौर पर पारिवारिक वातावरण में तनाव को जन्म देता है, जिससे किशोरों की आंतरिक और बाह्य शैक्षिक अभिप्रेरणा नकारात्मक रूप से प्रभावित होती है। इसके विपरीत, माता-पिता की जागरूकता और भावनात्मक रूप से सहायक पारिवारिक परिवेश, आर्थिक तंगी के बावजूद विद्यार्थियों में उच्च शैक्षणिक आकांक्षाओं को जाग्रत

करता है। यह अध्ययन नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों और समाजशास्त्रियों के लिए कुटीर उद्योग क्षेत्र के बच्चों हेतु लक्षित शैक्षिक हस्तक्षेपों को डिजाइन करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है।

प्रमुख शब्द: कुटीर उद्योग, किशोर विद्यार्थी, शैक्षिक अभिप्रेरणा, पारिवारिक वातावरण, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, श्रमिक परिवार, समीक्षात्मक अध्ययन।

2 प्रस्तावना

21वीं सदी में शिक्षा को न केवल व्यक्तिगत उत्थान का, बल्कि सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय उत्पादकता का सबसे शक्तिशाली इंजन स्वीकार किया गया है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) भी इस बात पर बल देती है कि शिक्षा तक पहुंच समतामूलक और समावेशी होनी चाहिए। हालांकि, भारतीय समाज के हाशिए पर मौजूद वर्गों, विशेष रूप से कुटीर और लघु उद्योगों में कार्यरत असंगठित श्रमिकों के परिवारों के लिए यह लक्ष्य आज भी एक चुनौती बना हुआ है। किसी भी विद्यार्थी की शैक्षणिक सफलता केवल उसकी जन्मजात संज्ञानात्मक क्षमता का परिणाम नहीं होती, बल्कि यह उसके परिवेश की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पूंजी से गहराई से प्रभावित होती है।

भारतीय श्रमबल का एक बहुत बड़ा हिस्सा अनौपचारिक या असंगठित क्षेत्र में कार्यरत है, जिसमें कुटीर उद्योग सबसे अग्रणी हैं। इन उद्योगों में काम करने वाले श्रमिकों के बच्चे जब 'किशोरावस्था' में प्रवेश करते हैं, तो उनकी मनोवैज्ञानिक और शैक्षणिक आवश्यकताएं अधिक जटिल हो जाती हैं। किशोरावस्था (10 से 19 वर्ष) जीवन का वह संधिकाल है जहां पहचान का संकट भविष्य की चिंताएं और करियर के प्रति दृष्टिकोण आकार लेते हैं। इस नाजुक दौर में, यदि सामाजिक-आर्थिक स्थिति प्रतिकूल हो और पारिवारिक वातावरण में निरंतर अभाव व तनाव व्याप्त हो, तो किशोरों की 'शैक्षिक अभिप्रेरणा' कुंठित होने लगती है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य उपलब्ध साहित्यों की समीक्षा के माध्यम से यह समझना है कि कुटीर उद्योगों की विशिष्ट आर्थिक परिस्थितियां किस प्रकार एक विशिष्ट पारिवारिक वातावरण का निर्माण करती हैं, और यह वातावरण अंततः उन किशोरों की पढ़ने-लिखने की प्रेरणा को कैसे संचालित करता है।

3. कुटीर उद्योग :

अवधारणा, स्वरूप एवं भारतीय अर्थव्यवस्था में भूमिका

कुटीर उद्योगों को सामान्यतः ऐसे घरेलू उद्यमों के रूप में परिभाषित किया जाता है जो मुख्य रूप से एक ही परिवार के सदस्यों के श्रम द्वारा, आंशिक या पूर्ण रूप से, संचालित होते हैं। इनमें पूंजी का निवेश न्यूनतम होता है, उपकरण पारंपरिक या अर्ध-स्वचालित होते हैं, और कच्चे माल की आपूर्ति स्थानीय स्तर पर की जाती है।

3.1 प्रमुख वर्गीकरण एवं क्षेत्रीय विस्तार

भारतीय संदर्भ में कुटीर उद्योगों को मुख्य रूप से दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

ग्रामीण कुटीर उद्योग: जैसे हथकरघा खादी, मिट्टी के बर्तन बनाना, हस्तशिल्प रस्सी बटना, और कृषि-आधारित प्रसंस्करण।

शहरी व अर्ध-शहरी कुटीर उद्योग: जैसे अगरबत्ती निर्माण, बीड़ी बनाना, चमड़े का काम, जरी-जरदोजी, खिलौना निर्माण, और छोटे पैमाने पर खाद्य प्रसंस्करण (जैसे पापड़, आचार बनाना)।

3.2 आर्थिक विरोधाभास

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्टों के अनुसार, कृषि के बाद यह क्षेत्र भारत में रोजगार का दूसरा सबसे बड़ा प्रदाता है। यह ग्रामीण पलायन को रोकने और महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परंतु, इस क्षेत्र की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि देश की जीडीपी में अमूल्य योगदान देने के बावजूद, इसके वास्तविक निर्माता यानी श्रमिक वर्ग स्वयं अत्यंत दयनीय परिस्थितियों में जीवन यापन करते हैं। बिचौलियों द्वारा शोषण, बाजार की अनिश्चितता, ऋण के पारंपरिक और महंगे स्रोतों पर निर्भरता तथा आधुनिक तकनीक के अभाव के कारण इन श्रमिकों का लाभांश न्यूनतम होता है। यह आर्थिक अनिश्चितता सीधे तौर पर उनके घरेलू जीवन को प्रभावित करती है।

4. कुटीर उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति

समीक्षात्मक दृष्टि से देखने पर कुटीर उद्योग के श्रमिकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति बहुआयामी अभावों से घिरी हुई प्रतीत होती है। समाजशास्त्रीय अध्ययनों में SES को मापने के लिए मुख्य रूप से तीन चरों का उपयोग किया जाता है: आय, शिक्षा और व्यावसायिक प्रतिष्ठा। इन तीनों ही पैमानों पर यह वर्ग पिरामिड के निचले हिस्से में आता है।

4.1 आय की अस्थिरता और ऋणग्रस्तता

इन श्रमिकों की दैनिक या मासिक आय निश्चित नहीं होती। त्योहारों या विशेष मौसमों में काम मिलता है, जबकि शेष समय वे मौसमी बेरोजगारी का सामना करते हैं। इस वित्तीय अस्थिरता के कारण परिवार का अधिकांश व्यय भोजन और स्वास्थ्य जैसी प्राथमिक आवश्यकताओं पर ही सिमट जाता है। शिक्षा को एक दीर्घकालिक निवेश माना जाता है, जिसके लिए इस वर्ग के पास तात्कालिक अधिशेष पूंजी नहीं होती।

4.2 डिजिटल विभाजन

वर्तमान समय में शिक्षा का तेजी से डिजिटलीकरण हुआ है। इस वर्ग के बच्चों के पास स्मार्टफोन, इंटरनेट कनेक्टिविटी, शांत अध्ययन कक्ष और कंप्यूटर जैसे आवश्यक उपकरणों की भारी कमी होती है। महामारी और उसके बाद के दौर में यह स्पष्ट देखा गया है कि डिजिटल संसाधनों के अभाव में कुटीर उद्योग के बच्चों का लर्निंग गैप अन्य वर्गों की तुलना में काफी बढ़ गया है।

4.3 बाल श्रम का परोक्ष दबाव

चूंकि कुटीर उद्योग 'पारिवारिक श्रम' पर टिके होते हैं, इसलिए किशोर विद्यार्थियों पर स्कूल के बाद या स्कूल के समय भी अपने माता-पिता के काम हाथ बंटाने का एक अदृश्य सामाजिक और आर्थिक दबाव होता है। हाथ से बुनाई करना या अगरबत्ती बनाना जैसे कार्यों में बच्चों की उंगलियों की कार्यकुशलता को उपयोगी माना जाता है, जिससे अनजाने में ही उनका अमूल्य समय शिक्षा के बजाय अनुत्पादक श्रम में चला जाता है।

5. किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा: एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

शैक्षिक अभिप्रेरणा केवल विद्यालय जाने की इच्छा नहीं है; यह एक जटिल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जो किसी भी छात्र को कठिन विषयों को सीखने और विपरीत परिस्थितियों में भी डटे रहने की ऊर्जा देती है। प्रेरणा के दो मुख्य प्रकार होते हैं जो किशोरों के संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं:

5.1 आंतरिक अभिप्रेरणा

जब कोई छात्र ज्ञान प्राप्त करने के आनंद, आत्म-संतुष्टि और जिज्ञासा के कारण पढ़ता है, तो उसे आंतरिक अभिप्रेरणा कहते हैं। समीक्षा दर्शाती है कि श्रमिक परिवारों के बच्चों में प्रारंभिक स्तर पर सीखने की तीव्र जिज्ञासा (आंतरिक अभिप्रेरणा) होती है, लेकिन जैसे-जैसे वे किशोरावस्था में पहुंचते हैं, उचित मार्गदर्शन और संसाधनों के अभाव में यह प्रेरणा धूमिल होने लगती है।

5.2 बाह्य अभिप्रेरण

जब शिक्षा का उद्देश्य कोई पुरस्कार प्राप्त करना, सजा से बचना या सामाजिक प्रतिष्ठा हासिल करना होता है, तो वह बाह्य अभिप्रेरण है। इन बच्चों के लिए सबसे बड़ी बाह्य अभिप्रेरण "गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकलना" होती है। परंतु, जब वे अपने आस-पास के शिक्षित बेरोजगार युवाओं को देखते हैं, तो उनका शिक्षा की उपयोगिता से विश्वास उठने लगता है, जिससे उनकी बाह्य अभिप्रेरण भी नकारात्मक रूप से प्रभावित होती है।

6. पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक विकास का अंतर्संबंध

परिवार समाज की प्राथमिक इकाई है और बालक की 'प्रथम पाठशाला' है। कुटीर उद्योगों में लगे परिवारों का वातावरण अन्य नौकरीपेशा या व्यावसायिक परिवारों से भिन्न होता है क्योंकि यहाँ कार्यस्थल और निवास स्थान प्रायः एक ही होता है।

6.1 भौतिक वातावरण

अधिकांश श्रमिक छोटे, तंग और कम रोशनी वाले मकानों में रहते हैं, जहाँ पूरा परिवार एक या दो कमरों में ही सिमट कर रहता है। इसी स्थान पर उद्योग का काम भी चलता है (जैसे सिलाई, कताई या पैकिंग)। ऐसे कोलाहलपूर्ण और संकीर्ण वातावरण में किशोर विद्यार्थियों को एकाग्रता के साथ अध्ययन करने के लिए आवश्यक "शांत कोना" नहीं मिल पाता।

6.2 मनोवैज्ञानिक और संवेगात्मक वातावरण

वित्तीय संकट और अनिश्चित भविष्य के कारण इन परिवारों में अक्सर माता-पिता के बीच मानसिक तनाव, कलह या निराशा का माहौल रहता है। मनोवैज्ञानिक शोधों के अनुसार, निरंतर पारिवारिक तनाव से घिरे रहने वाले किशोरों में अवसाद, एंगजायटी और कम आत्मसम्मान जैसी समस्याएं देखी जाती हैं, जो सीधे तौर पर उनकी संज्ञानात्मक क्षमताओं को अवरुद्ध कर देती हैं।

6.3 माता-पिता की शैक्षिक आकांक्षाएं

यहाँ एक सकारात्मक पहलू भी देखने को मिलता है। कई मामलों में, अनपढ़ या कम पढ़े-लिखे माता-पिता अपनी दुर्दशा को देखकर यह दृढ़ संकल्प लेते हैं कि वे अपने बच्चों को इस कठिन श्रम से दूर करेंगे और उन्हें पढ़ाएंगे। यदि माता-पिता का यह दृष्टिकोण सकारात्मक और संबल देने वाला हो, तो विपरीत आर्थिक स्थिति में भी बच्चे उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं। इसे समाजशास्त्र में "लचीलापन" कहा जाता है।

7. सामाजिक-आर्थिक स्थिति का शिक्षा पर संचयी प्रभाव

सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव रैखिक नहीं बल्कि संचयी होता है। यह जीवन के शुरुआती चरणों से लेकर उच्च शिक्षा तक छात्र के अवसरों को निर्धारित करता है। सामाजिक-आर्थिक कारक किशोर विद्यार्थी पर प्रत्यक्ष प्रभाव दीर्घकालिक शैक्षणिक परिणाम निम्न मासिक आय पूरक अध्ययन सामग्री, ट्यूशन और तकनीकी गैजेट्स की अनुपलब्धता। प्रतियोगी परीक्षाओं में पिछड़ जाना। माता-पिता की निरक्षरता गृहकार्य में शैक्षणिक सहायता का अभाव, करियर मार्गदर्शन की कमी। विषय चयन में त्रुटि, दिशाहीनता। घरेलू श्रम की आवश्यकता स्कूल में अनुपस्थिति थकान और शारीरिक शिथिलता। ड्रॉपआउट की उच्च दर। पोषाहार का अभाव कुपोषण, एनीमिया (अल्प-रक्तता) और बार-बार बीमार पड़ना। ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई ऊपर दी गई तालिका से स्पष्ट है कि सामाजिक-आर्थिक अभाव केवल धन की कमी तक सीमित नहीं है, बल्कि यह धीरे-धीरे बच्चे के स्वास्थ्य, समय और अंततः उसकी पूरी मेधा को लील लेता है।

8. संबंधित साहित्य की समीक्षा

प्रस्तुत विषय के विभिन्न आयामों को समझने के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हुए शोधों का गंभीर मूल्यांकन आवश्यक है:

अग्रवाल (2010) और चौहान (2013) ने अपने मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में पाया कि किशोरों की शैक्षिक अभिप्रेरणा पर उनके साथियों से अधिक उनके पारिवारिक परिवेश का प्रभाव पड़ता है। यदि परिवार में शिक्षा को मूल्यवान माना जाता है, तो छात्र की आंतरिक प्रेरणा स्वतः बढ़ जाती है।

यादव (2019) ने उत्तर भारत के ग्रामीण अंचलों में किए गए अपने अनुभवजन्य शोध में निष्कर्ष निकाला कि निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों में 'शैक्षणिक चिंता' का स्तर बहुत ऊंचा होता है क्योंकि उन पर अपने परिवार की उम्मीदों और आर्थिक उत्थान का भारी बोझ होता है।

यूनेस्को (UNESCO, 2021) की ग्लोबल एजुकेशन मॉनिटरिंग रिपोर्ट के अनुसार, विकासशील देशों में असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के बच्चों में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर ड्रॉपआउट दर प्राथमिक स्तर की तुलना में तीन गुना अधिक है, जिसका मुख्य कारण आर्थिक तंगी और बाल श्रम की ओर झुकाव है।

बर्मा (2017) का अध्ययन दर्शाता है कि कुटीर उद्योगों जैसे हथकरघा और कालीन उद्योग में लगे परिवारों के बच्चे अक्सर 'पीढ़ीगत कौशल हस्तांतरण' के चक्र में फंस जाते हैं। माता-पिता उन्हें औपचारिक शिक्षा दिलाने के बजाय पारंपरिक कला सिखाने को अधिक सुरक्षित और तात्कालिक आय का जरिया मानते हैं।

9. शोध-अंतर पूर्ववर्ती साहित्यों के गहन विश्लेषण से निम्नलिखित महत्वपूर्ण शोध-अंतर रेखांकित किए गए हैं:

एकीकृत उपागम का अभाव: अधिकांश मौजूदा शोधों ने शैक्षिक अभिप्रेरणा, पारिवारिक वातावरण या सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अलग-अलग या केवल दो चरों के युग्म में अध्ययन किया है। कुटीर उद्योग के विशिष्ट संदर्भ में इन तीनों कारकों के त्रिकोणीय और संचयी प्रभाव को समझने वाले एकीकृत अध्ययनों की भारी कमी है।

भौगोलिक एकांगिकता: उपलब्ध शोधों का एक बड़ा हिस्सा या तो पूर्णतः शहरी झुग्गी-झोपड़ियों पर केंद्रित है या फिर कृषि श्रमिकों पर। कालीन, जरी, हस्तशिल्प और मिट्टी के बर्तन जैसे विशिष्ट कुटीर उद्योगों में पीढ़ियों से काम कर रहे श्रमिकों के बच्चों के मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक संकट पर समकालीन डेटा अत्यंत सीमित है।

डिजिटल युग और NEP 2020 का प्रभाव: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने और डिजिटल शिक्षा के अनिवार्य होने के बाद, कुटीर उद्योग के हाशिए पर खड़े इन बच्चों की बदलती अभिप्रेरणा और उनके पारिवारिक संघर्षों का मूल्यांकन करने वाले नवीन शोध न के बराबर हैं।

10. चर्चा एवं विश्लेषण इस समीक्षात्मक अध्ययन के विश्लेषण से यह उभर कर आता है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा कोई स्वतंत्र चर नहीं है जो शून्य में विकसित हो सके। यह पूरी तरह से पारिवारिक वातावरण और सामाजिक-आर्थिक स्थिति जैसे आश्रित और मध्यस्थ चरोंद्वारा निर्धारित होती है।

कुटीर उद्योग के श्रमिक परिवारों में एक विशिष्ट प्रकार का 'सांस्कृतिक विरोधाभास' देखने को मिलता है। एक ओर जहाँ आधुनिक समाज सूचना और ज्ञान आधारित आजीविका की ओर बढ़ रहा है, वहीं ये परिवार अभी भी जीवित रहने के न्यूनतम संघर्ष में उलझे हुए हैं। जब एक किशोर विद्यार्थी अपने माता-पिता को दिन-रात कठिन शारीरिक श्रम करते हुए और उसके बदले बहुत मामूली पारिश्रमिक पाते हुए देखता है, तो उसके मन में दो विपरीत विचारधाराएं जन्म ले सकती हैं:

सकारात्मक प्रतिक्रिया वह शिक्षा को इस नारकीय चक्र से बाहर निकलने का एकमात्र हथियार मानकर अपनी पूरी ताकत झोंक देता है। यहाँ उसकी बाह्य प्रेरणा अत्यधिक तीव्र हो जाती है।

नकारात्मक प्रतिक्रिया वह यह मान लेता है कि चाहे वह कितनी भी पढ़ाई कर ले, उसकी नियति भी अंततः इसी पारंपरिक श्रम में जुटने की है। इस स्थिति को मनोविज्ञान में 'सीखी हुई लाचारी' कहा जाता है, जो उसकी शैक्षिक अभिप्रेरणा को पूरी तरह समाप्त कर देती है।

अतः, केवल विद्यालयों में मुफ्त पुस्तकें या मध्याह्न भोजन (Mid-day Meal) दे देने से इस वर्ग के किशोरों को शिक्षा की मुख्यधारा में बनाए रखना संभव नहीं है, जब तक कि उनके घरेलू और आर्थिक वातावरण में सुधार के ठोस प्रयास न किए जाएं।

11. निष्कर्ष

प्रस्तुत समीक्षात्मक अध्ययन से यह सुस्पष्ट निष्कर्ष निकलता है कि कुटीर उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के पाल्य किशोर विद्यार्थियों का शैक्षणिक भविष्य उनके माता-पिता की सामाजिक-आर्थिक विवशताओं और घरेलू वातावरण के साथ जटिल रूप से बुना हुआ है। आर्थिक अभाव जहाँ भौतिक संसाधनों (जैसे पुस्तकें, डिजिटल उपकरण, शांत स्थान) की उपलब्धता को रोकता है, वहीं पारिवारिक तनाव बच्चों के संवेगात्मक स्वास्थ्य को क्षति पहुँचाता है, जिससे उनकी शैक्षिक अभिप्रेरणा कुंठित होती है। इसके बावजूद, माता-पिता की वैचारिक जागरूकता और सकारात्मक संवेगात्मक समर्थन इस अंधकार में एक बड़ी ढाल बनकर उभर सकते हैं। जब तक हम कुटीर उद्योग क्षेत्र के श्रमिकों की आर्थिक सुरक्षा और उनके बच्चों के शैक्षणिक परिवेश को एक साथ सुदृढ़ नहीं करेंगे, तब तक देश में 'समतामूलक शिक्षा' का स्वप्न अधूरा ही रहेगा।

12. शैक्षिक, सामाजिक एवं नीतिगत निहितार्थ

इस अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित व्यावहारिक कदम उठाए जाने की तत्काल आवश्यकता है:

लक्षित वित्तीय एवं डिजिटल सहायता: कुटीर उद्योग बाहुल्य क्षेत्रों (जैसे भदोही के कालीन क्षेत्र, फिरोजाबाद के कांच उद्योग, सूरत के जरी उद्योग आदि) के चिन्हित किशोर विद्यार्थियों को विशेष 'मेधा छात्रवृत्ति' तथा मुफ्त डिजिटल टैबलेट व डेटा पैक उपलब्ध कराए जाएं।

कम्युनिटी लर्निंग सेंटर्स की स्थापना: श्रमिक बस्तियों के भीतर ही सरकार या स्वयंसेवी संस्थाओं (NGOs) के सहयोग से ऐसे अध्ययन केंद्रों की स्थापना की जाए जहाँ शांत वातावरण, बिजली, इंटरनेट और बुनियादी पुस्तकालय की सुविधा हो, ताकि बच्चे घर के कोलाहल से दूर वहाँ पढ़ सकें।

अभिभावक परामर्श एवं चेतना शिविर माता-पिता को यह समझाने के लिए नियमित कार्यक्रम चलाए जाएं कि किशोरावस्था में बच्चों पर काम का अत्यधिक बोझ डालने से उनका भविष्य नष्ट हो सकता है। उन्हें सरकारी कौशल विकास योजनाओं और छात्रवृत्तियों के प्रति जागरूक किया जाए।

लचीली स्कूली समय-सारणी इन क्षेत्रों के सरकारी और सहायता प्राप्त विद्यालयों के समय में थोड़ा लचीलापन होना चाहिए, ताकि यदि बच्चे किसी सीजन में परिवार की मदद भी कर रहे हों, तो उनकी पढ़ाई पूरी तरह न छूटे और वे स्कूल से जुड़े रहें।

व्यावसायिक और औपचारिक शिक्षा का एकीकरण NEP 2020 के अनुरूप, इन बच्चों के पास मौजूद पारंपरिक पारंपरिक कौशलों (जैसे हस्तशिल्प, बुनाई) को स्कूल में ही क्रेडिट दिए जाएं, ताकि वे खुद को हीन न समझें और औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ अपने कौशल को आधुनिक उद्यमशीलता में बदल सकें।

13. भविष्य के शोध हेतु दिशा-निर्देश तुलनात्मक क्षेत्रीय अध्ययन:

भारत के विभिन्न राज्यों (जैसे उत्तर बनाम दक्षिण भारत) के कुटीर उद्योग श्रमिकों के बच्चों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का एक व्यापक तुलनात्मक और अनुभवजन्य अध्ययन किया जाना चाहिए।

जेंडर-आधारित विश्लेषण : इस बात पर विशेष शोध होना चाहिए कि कुटीर उद्योग के आर्थिक दबावों का श्रमिक परिवारों की 'किशोर लड़कियों' की शिक्षा और उनकी अभिप्रेरणा पर बालकों की तुलना में क्या अलग प्रभाव पड़ता है।

दीर्घकालिक अनुदैर्ध्य अध्ययन कुटीर उद्योग के बच्चों के एक समूह का उनकी माध्यमिक शिक्षा से लेकर उनके करियर चयन तक 5 से 10 वर्षों तक अनुवर्ती अध्ययन किया जाए, ताकि ड्रॉपआउट और करियर गतिशीलता के वास्तविक पैटर्न को समझा जा सके।

14. संदर्भ सूची

- Aggarwal, J. C. (2010). Educational Psychology. New Delhi: Vikas Publishing House.
- Best, J. W., & Kahn, J. V. (2016). Research in Education. Eighth Edition, Pearson Education.
- Buch, M. B. (2007). Fourth Survey of Research in Education. New Delhi: NCERT.
- Chauhan, S. S. (2013). Advanced Educational Psychology. New Delhi: Vikas Publishing House.
- Desai, I. P. (2011). Socio-Economic Problems of Rural India. Mumbai: Popular Prakashan.
- Government of India. (2023). Annual Report 2022-23. Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises (MSME).
- Kothari, C. R. (2019). Research Methodology: Methods and Techniques. New Age International Publishers.
- Mangal, S. K. (2018). Advanced Educational Psychology. New Delhi: PHI Learning Pvt. Ltd.
- Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Government of India.
- NCERT. (2022). Education in India: Status, Challenges and Future Roadmaps. New Delhi: National Council of Educational Research and Training.
- Panda, B. N. (2015). Educational Sociology. New Delhi: Discovery Publishing House.
- Sharma, R. A. (2017). Fundamentals of Educational Research. Meerut: R. Lall Book Depot.

- Singh, A. K. (2016). Tests, Measurements and Research Methods in Behavioural Sciences. Patna: Bharati Bhawan.
- Tiwari, P. S. (2018). Sociology of Education: Indian Perspective. Delhi: Shipra Publications.
- UNESCO. (2021). Global Education Monitoring Report: Inclusion and education - All means all. Paris: UNESCO.
- UNICEF. (2022). Adolescent Development, Mental Health and Education Status in South Asia. New York: UNICEF.
- Verma, B. P. (2017). A study of academic motivation in relation to home environment of unorganized sector workers' children. Indian Journal of Educational Research, 41(3), 112-125.
- World Bank. (2020). The State of Global Education Crisis: A Path to Recovery. Washington DC: World Bank Group.
- Yadav, R. (2019). Impact of Socio-Economic Status on Academic Anxiety and Motivation of Semi-Urban Adolescents. Journal of Community Guidance and Research, 36(2), 245-258.

